Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 SHISRRJ | Volume 7 | Issue 5
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

किन्नर एक ऐतिहासिक अध्ययन

संजय कुमार यादव
शोधार्थी

Article Info

Accepted : 05 Oct 2024
Published : 20 Oct 2024

Publication Issue :
September-October -2024
Volume 7, Issue 5

Page Number : 08-12

अगर कहा जाए कि समाज हमारे पूर्ण रूप से दो स्तंभों पर खड़ा है, तो इसे मानने में किसी को कोई हर्ज नहीं होगा, क्योंकि यही सच्चाई है कि जिन दो स्तंभों की बात कर रहे हैं, वही स्त्री और पुरुष पर समाज आगे बढ़ता है। लेकिन यह कहना कि संसार में यही दो लिंगों का अस्तित्व है, सर्वथा अनुचित होगा। कारण, इन दोनों लिंगों के अलावा भी प्रकृति ने एक अन्य प्रजाति को बनाने का प्रयास किया और सफलता भी प्राप्त की, जिन्हें समाज में थर्ड जेंडर के रूप में मान्यता प्राप्त है और विभिन्न उपमाओं से संबोधित किया जाता है, जैसे कि किन्नर, हिजड़ा, छक्का, नपुंसक, नामर्द आदि। ये प्राकृतिक रूप से न तो पुरुष होते हैं और न ही नारी। इनमें सामान्य रूप से पुरुष और स्त्री दोनों के गुण विद्यमान होते हैं। इसलिए आम जीवन यापन करने के लिए लोग उन्हें जानने की इच्छा रखते हैं। किन्नर के वर्णन की बात करें, तो आज आधुनिक युग में ही नहीं, इनका उल्लेख प्राचीन शास्त्रों में भी मिलता है। किंतु उनके संबंध में संपूर्ण जानकारी हेतु कोई भी किसी प्रकार का औपचारिक प्रबंध नहीं है। उनके विषय में मात्र इतना ही हमें उल्लेख मिलता है कि किन्नर भी यक्षों और गंधर्वों की भांति नृत्य-गान की कला में परिपक्व होते हैं।

इनकी उत्पत्ति के संदर्भ में भी अनेक किवदंतियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से दो प्रवाद इस प्रकार हैं:

1. ये भगवान ब्रह्मा की छाया से अथवा उनके पैर के अंगूठे से जन्म लिए हैं।
2. ये अरिष्ट और कश्यप के वंशज के रूप में माने जाते हैं; वे उनके आदि प्रवर्तक थे।
3. हिमालय पर्वत का पवित्र शिखर कैलाश किन्नरों का प्रमुख निवास था, जहाँ रहकर वे भगवान शिव की सेवा और आराधना किया करते थे। इन्हें देवताओं का गायक और भक्त के रूप में मान्यता प्राप्त थी।

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

शतपथ ब्राह्मण ग्रंथ में अश्वमुखी मानव शरीर वाले किन्नर का उल्लेख मिलता है। बौद्ध साहित्य में किन्नर की कल्पना एक मानवमुखी पक्षी के रूप में की गई है। मानसार में इनका उल्लेख मानवशरीरी और पशुपद के तौर पर मिलता है।

इतिहास की बात करें, तो जब से दुनिया बनी, तब से संसार में किन्नर मौजूद हैं। ऐसा लगता है जब हम पुराणों और पौराणिक ग्रंथों को देखते हैं। शिव पुराण में भी उल्लेख किया गया है कि सृष्टि के प्रारंभ में ब्रह्मा जी ने योग माया द्वारा पुरुष को उत्पन्न किया, परंतु मनुष्य और जीवों को उत्पन्न करने में उन्हें बहुत अधिक समय लग रहा था। इस स्थिति में ब्रह्मा जी के आग्रह पर भगवान शिव ने अपने शरीर के आधे भाग से एक स्त्री को उत्पन्न किया और अर्धनारीश्वर के रूप में स्वयं को प्रकट किया।

अर्धनारीश्वर के स्वरूप में शिव न तो पूर्ण पुरुष थे और न ही स्त्री। अर्धनारीश्वर के रूप में जहाँ संसार में स्त्री की रचना हुई, वहीं किन्नर की भी कल्पना हुई। इसलिए कथाओं के अनुसार, शिव ही किन्नरों को सृष्टि में लाए जाने वाले माने गए। इसी प्रकार, ज्योतिषशास्त्र में बुध ग्रह को नपुंसक माना जाता है और किन्नरों में बुद्ध का वास माना जाता है। इसी कारण ज्योतिष शास्त्र में बुध ग्रह को अनुकूल बनाने में किन्नर को महत्वपूर्ण माना गया है।

पौराणिक आख्यान में रामायण, महाभारत, और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में किन्नरों से संबंधित कई घटनाएँ मिलती हैं। अगर हम रामायण की बात करें, तो इसमें सबसे प्रसिद्ध कथा भगवान राम के वनवास जाने से संबंधित है। कथा इस प्रकार है: जब श्री राम जी 14 वर्ष के लिए वनवास जा रहे थे, तब पूरी अयोध्या के वासियों ने उन्हें छोड़ने के लिए एकत्रित हुए, जिसमें किन्नर भी शामिल थे। कोई भी उन्हें वनवास जाने देने पर राजी नहीं था; सभी उनके साथ-साथ वन की ओर जा रहे थे।

तब भगवान राम ने आग्रहपूर्वक कहा कि सभी नर-नारी अपने निवास को लौट जाएं। उनकी बात सुनकर सभी स्त्री-पुरुष लौट गए, लेकिन राम के कथन में किन्नर शब्द का कोई उल्लेख नहीं था अतः वे सभी किन्नर वहीं रुके रहे। 14 साल के लिए उन्होंने प्रभु राम का इंतजार किया। जब राम अपना 14 वर्ष का वनवास पूरा करके वापस लौटे, तो उन्होंने सभी किन्नरों को उसी स्थान पर खड़ा देखा, जहाँ वे उन्हें छोड़ गए थे।

इस परिदृश्य को देखकर प्रभु राम जी बहुत भावुक हुए और संपूर्ण किन्नर समाज को आशीर्वाद दिया कि उनके द्वारा दिया गया आशीर्वाद कभी अपूर्ण नहीं रहेगा।

इसी प्रकार अगर हम महाभारत की बात करें तो महाभारत में किन्नर से संबंधित तीन कथाएं देखने को मिलता है। इनमें से एक प्रसिद्ध कथा अर्जुन के किन्नर बनने की है। हुआ यह कि जब पांडव अपने

वनवास के दिन काट रहे थे, तब श्री कृष्ण ने उनसे मिलने आकर अर्जुन को समझाया कि युद्ध के समय तुम्हें दिव्यास्त्रों की आवश्यकता पड़ेगी। इसलिए, तुम देवताओं को प्रसन्न करके दिव्यास्त्र प्राप्त करो। इस प्रकार श्री कृष्ण की बात मानकर अर्जुन तपस्या करने के लिए निकल पड़ते हैं।

तपस्या से प्रसन्न होकर जब भगवान शिव अर्जुन को कई दिव्यास्त्र प्रदान करते हैं, तो इंद्र उन्हें स्वर्ग में आमंत्रित करते हैं। वहाँ अर्जुन को देवताओं ने भी दिव्यास्त्र दिए। फिर अर्जुन को संगीत और नृत्य सिखाने हेतु चित्र सेन के पास भेजा जाता है। वहाँ अप्सरा उर्वशी उन पर मोहित हो जाती हैं, लेकिन पूर्व वंश की जननी होने के कारण अर्जुन उर्वशी को माता के समान बताकर उनके प्रणय निवेदन को अस्वीकार कर देते हैं। इस पर उर्वशी क्रोधित होकर अर्जुन को एक वर्ष तक किन्नर बने रहने का श्राप देती हैं। इस प्रकार अर्जुन ने अपने अज्ञातवास के दौरान एक वर्ष तक किन्नर बनकर जीवन व्यतीत किया।

महाभारत में किन्नर से संबंधित दूसरी कथा युद्ध से पूर्व की है, जिसमें काली मां के चरणों में नरबलि दी जानी थी। इसके लिए एक राजकुमार की आवश्यकता थी, लेकिन जब कोई राजकुमार नहीं आया, तब अर्जुन और नागकन्या उल्लू पी का पुत्र अपनी इच्छा से बलि हेतु सामने आते हैं। परंतु उनका एक शर्त होता है कि वे अविवाहित नहीं मरना चाहते थे। इस स्थिति में कृष्ण, पुरुष होकर भी स्त्री रूप में अरावण से शादी रचाते हैं। बलि के पश्चात, अरावण की मृत्यु पर कृष्ण मोहिनी रूप में काफी देर तक विलाप करती हैं।

तीसरी कथा अंबा की है, जो द्रुपद के यहाँ पुनर्जन्म लेती हैं। उनका लालन-पालन पुरुष की तरह किया गया और उन्हें शिखंडी के नाम से जाना गया। कालांतर में उनका विवाह भी करवाया गया। कहा जाता है कि एक यक्ष ने उन्हें अपना पुरुषत्व दे दिया था, जिससे वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ सुखपूर्व वैवाहिक जीवन बिताती हैं। उनके देहांत के बाद उनका पुरुषत्व पुनः यक्ष को प्राप्त हो गया। इस प्रकार, एक ही तन में शिखंडी ने पुरुष और स्त्री दोनों का जीवन जिया।

अगर हम ज्योतिष शास्त्र की बात करें, तो इसके अनुसार बुध ग्रह को नपुंसक माना गया है और किन्नर में बुध ग्रह का वास माना जाता है। यही वास्तविक कारण है कि बुद्ध को अनुकूल बनाने हेतु किन्नर को ज्योतिष शास्त्र में काफी महत्व दिया गया है। ऐसा माना जाता है कि बुध ग्रह नपुंसक है और वह स्वयं कोई फल नहीं प्रदान करता; बल्कि वह जिस ग्रह के साथ आता है, उसी के अनुसार फल प्रदान करने लगता है।

इसलिए, बुध ग्रह के दोष को दूर करने का उपाय किन्नर से संबंधित माना जाता है। किन्नर को प्रसन्न करके बुध ग्रह को शांत किया जा सकता है। इस प्रकार, हम देखते हैं कि ज्योतिष शास्त्र में भी किन्नर का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है।

अजंता की चित्रों की बात करें, तो गुह्यकों, किरातों, और किन्नर के चित्र भी हमें देखने को मिलते हैं। इन चित्रों का अपना एक ऐतिहासिक महत्व है, जो ईसा की तीसरी से आठवीं शताब्दी के बीच की धार्मिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य को हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं। इन चित्रों में न केवल कलात्मक कौशल दिखता है, बल्कि उस युग के सामाजिक मानदंडों और मान्यताओं का भी परिचय मिलता है।

बौद्ध ग्रंथों में भी किन्नर का उल्लेख मिलता है। विशेष रूप से "चंद किन्नर जातक" में बोधिसत्व के हिमाचल प्रदेश में किन्नर की योनि में जन्म लेने की बात का उल्लेख किया गया है। इस संदर्भ में इस ग्रंथ में किन्नर और किन्नरों की कई कहानियों का विवरण मिलता है, जो उनके जीवन, संघर्ष और उनके अद्वितीय अस्तित्व को दर्शाते हैं। इन कथाओं के माध्यम से बौद्ध साहित्य में किन्नरों की सामाजिक और धार्मिक पहचान को भी उजागर किया गया है।

किन्नर की बात करें मुगल काल के संदर्भ में, तो जानकारी के अनुसार, मुगलों के समय में किन्नर रानियों की हिफाजत के लिए रहते थे और इन्हें "ख्वाजासरा" के नाम से जाना जाता ब्रिटिश काल में कोर्ट ने पहली बार किन्नरों को ट्रांसजेंडर का अधिकार प्रदान किया, जबकि अंग्रेजों ने किन्नरों को "क्रिमिनल कास्ट" की संज्ञा दी थी। इसके बाद, मुख्य चुनाव आयुक्त ने किन्नरों को मत का अधिकार भी दिया।

15 अप्रैल 2014 को सुप्रीम कोर्ट ने किन्नरों को समाज में तीसरे लिंग के रूप में पहचान दी और कहा कि किन्नर आज भी अछूत के रूप में जीवन जी रहे हैं। उन्हें संविधान में दिए गए मूल अधिकारों से दूर रखना उचित नहीं है। इसके साथ ही, किन्नरों को शिक्षा, रोजगार, और स्वास्थ्य सेवाओं में विशेष स्थान और अवसर प्रदान किया गया और उन्हें धारा 377 में शामिल किया गया।

थर्ड जेंडर के अधिकार की भावना को समझते हुए न्यायालय ने गोपनीयता के अधिकार को व्यापकता प्रदान की, जिसमें उनका अपने जीवन का निर्णय लेने का अधिकार भी शामिल है। यह माना जाने लगा कि धारा 377 हटाने के पश्चात एड्स की तीव्रता बढ़ेगी, लेकिन यह एक निरर्थक धारणा है, क्योंकि यह असंगत मान्यताओं पर आधारित है।

वर्तमान की बात करें तो शुरुआती साहित्य से उपेक्षित किन्नर समुदाय पर आज बहुत अधिक चर्चा हो रही है समाज में राजनीति में संविधान हो या अदालत हर जगह उनकी समस्याओं को उठाकर उसके समाधान की कोशिश हो रही है वर्तमान में किन्नर समुदाय को राजनीतिक और चुनाव में भाग लेने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है इन पर हुए यात्राओं पर चर्चा हो रही है साहित्य में किन्नर पर चर्चा तृतीय लिंगी विमर्श या किन्नर विमर्श के नाम से बहुत अधिक और महत्वपूर्ण चिंतन हो रहा है गिरजा माधव रचित यमदीप के पश्चात ऐसा माना जाता है कि किन्नर विमर्श वास्तविक रूप से आरंभ हुआ तत्पश्चात प्रदीप सौरभ की तीसरी ताली महेंद्र भीष्म रचित किन्नर कथा और मैं पायल निर्मला गुड़िया कृत गुलाम मंडी चित्रा मुद्गल पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा आदि अनेक उपन्यास और कहानी वर्तमान में लिखी जा रही है अतः इस बात को ध्यान में रखकर मैं भी LGBBTQIA+ पर अब तक अपने चार काव्य संग्रह प्रकाशित कर चुका हूं जो इस प्रकार है –

1. इन्द्रधनुष के अंतर्मन की आवाज
2. आत्मा की विविध रंगों में रंगी इन्द्रधनुषी गाथाएँ
3. रंग सात कहानियां अनेक
4.पहचान की तलाश में भटकते इन्द्रधनुष

अतः इस प्रकार निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि हमारा समाज सिर्फ दो लिंगों पर ही आधारित नहीं है, बल्कि इसमें एक तीसरे लिंग का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है, जिसे हम किन्नर कहते हैं। किन्नरों का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक पहचान भी हमारे संस्कृति को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देता है, जो प्राचीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक समाज तक फैला हुआ है। विभिन्न कालों में इन्हें विभिन्न तरीकों से समझा गया और उस समय के अनुसार इन्हें सम्मान प्रदान किया गया। आधुनिक युग में इन्हें तीसरे लिंग के रूप में पहचान मिली है और अनेक अधिकार और अवसर प्रदान किए गए हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

[1] किन्नर (विकिपीडिआ) https://hi.wikipedia.org/wiki/किन्नर

[2] किन्नर - भारतकोश, ज्ञान का हिन्दी महासागर (bharatdiscovery.org)

[3] थर्ड जेंडर : हिंदी कहानियां, किन्नर जीवन का संघर्ष | Third Gender : Hindi kahaniyan – Kinnar jeevan ka Sangharsh

[4] थर्ड जेंडर : हिंदी कहानियां, किन्नर जीवन का संघर्ष | Third Gender : Hindi kahaniyan - Kinnar jeevan ka Sangharsh - (sahityasrijan.com)